आशावाद आस्तिकता और निराशावाद नास्तिकता : अमरनाथ भाई

एक तो बिनोवा भावे ने कहा था कि आशावाद आस्तिकता और निराशावाद नास्तिकता है और दूसरा गांधी ने कहा, "सत्य ही ईश्वर है।" इन दो बातों ने मुझे कम्यूनिष्ट पार्टी से सर्वोदय में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। यदि हम निराकारा ईश्वर को नहीं मानते तो सकार प्रकृति को तो मानते ही हैं। यह विचार दिनांक 20/08/2015 को विशेष व्याख्यानमाला के अंतर्गत विकास एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में सुप्रसिद्ध सर्वोदयी श्री अमरनाथ भाई ने दिया। उन्होंने कहा कि आज दूनिया पाँच 'अ' यानि अनिंद्रा, अकेलापन, अवसाद, अविश्वास और अनास्था से परेशान है। इसे गांधी के पाँच 'प' यानि पेट, परिवार, पड़ोस, प्रकृति और परमात्मा के प्रति आस्था से सामाधान किया जा सकता है। उन्होंने मैं और शरीर के भेद को सरल दार्शनिक शब्दों में स्पष्ट किया। उन्होंने आज के समय की व्याख्या करते हुए बताया कि दुनिया भौतिकतावाद के पीछे दौड़ रही है। यह सब शरीर के सुख सुविधा के लिए किया जा रहा है जैसे शरीर ही महत्त्वपूर्ण हो गया हो।

उन्होंने युवाओं का अहवान करते हुए कहा कि वे भौतिकता से परे दुनिया को वास्तविक अर्थों को समझने की कोशिश करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विकास एवं शांति अध्ययन के विभागाध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने कहा कि अमरनाथ भाई का जीवन पिछले छः दशकों से सामाजिक जीवन की मिशाल बना हुआ है। आपने भूदान ग्रामदान और जे. पी. आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने विभाग के संदर्भ में इस बात पर आश्वस्ति जाहिर की कि विभाग का दायित्व वैकल्पिक विकास की सम्भावनाओं को तलाशने का है ताकि जल, जंगल, जमीन को बचाया जा सके।

कार्यक्रम में डॉ. डी. एन. प्रसाद, डॉ. एम. के. राय, डॉ. राकेश मिश्र और डॉ. चित्रा माली के अतिरिक्त विभाग के एम. ए. के छात्र अमोल, एम. फिल. के रोहित, विद्या कांबले, शैलेंद्र यादव, ब्रिजेश और पी-एच. डी. के नीरज कुमार, अमृत अर्णव, पंकज कुमार सिंह, चंदन कुमार, मनोज कुमार, अनुज सिंह रावत, मनिषा, हुस्नतब्बसुम, शिवाजी जोगदंड आदि शोधार्थी उपस्थित थे।